दिसंबर 2026 और जून 2027 के लिए टीईई सत्रीय कार्य

पाठ्यक्रम कोड: बीएमडीजी 171
सत्रीय कार्य कोड: बीएमडीजी 171/एससटी /टीएमए /2026-27/

BMDG-171 'दिव्यांगता, समाज और संस्कृति'
अंत:विषयक पाठ्यक्रम (IDC)

नोट: प्रत्येक भाग के सभी प्रश्नों के उत्तर दें।

1. भाग- क के प्रत्येक प्रश्न के लिए 20 अंक हैं।

2. भाग-ख के प्रत्येक प्रश्न के लिए 10 अंक हैं।

3. भाग- ग के प्रत्येक प्रश्न के लिए 6 अंक हैं।

भाग- क

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए। (20x2=40)

1. दिव्यांगता को परिभाषित कीजिए। दिव्यांगता के संबंध में सामाजिक दृष्टिकोणों और रूढ़िवादी धारणाओं (स्टीरियोटाइप्स) पर चर्चा कीजिए।

2. शिक्षा के संबंध में दिव्यांग व्यक्तियों द्वारा अनुभव की जाने वाली समस्याओं और चुनौतियों पर चर्चा कीजिए।

भाग- ख

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 250 शब्दों में दीजिए। (10x3=30)

3. सार्वभौमिक डिजाइन (Universal Design) क्या है? यह दिव्यांग व्यक्तियों की सहायता कैसे कर सकता है?

4. दिव्यांग महिलाओं और लड़कियों द्वारा अनुभव की जाने वाली प्रमुख समस्याएं क्या हैं?

5. बुजुर्ग दिव्यांगजनों को किन प्रमुख समस्याओं का सामना करना पड़ता है?

भाग- ग

निम्नलिखित में से प्रत्येक पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिए। (6x5=30)

6. दिव्यांगता का धार्मिक मॉडल।

7. सहायक प्रौद्योगिकी (Assistive Technology)।

8. दिव्यांगजनों के जीवन पर गरीबी का प्रभाव।

9. दिव्यांगजनों के लिए स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुंच में बाधाएं।

10. दिव्यांगजनों की राजनीतिक भागीदारी।

1. दिव्यांगता को परिभाषित कीजिए। दिव्यांगता के संबंध में सामाजिक दृष्टिकोणों और रूढ़िवादी धारणाओं (स्टीरियोटाइप्स) पर चर्चा कीजिए।

उत्तर

दिव्यांगता का अर्थ केवल शरीर या मन में किसी कमी का होना नहीं है। जब किसी व्यक्ति की दीर्घकालिक शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक अथवा संवेदी स्थिति का समाज में मौजूद बाधाओं से संबंध बनता है और उसकी समान भागीदारी प्रभावित होती है, तब दिव्यांगता का अनुभव उत्पन्न होता है। संयुक्त राष्ट्र के दिव्यांगजन अधिकार अभिसमय और भारत के दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम, 2016 में इस पारस्परिक संबंध को महत्व दिया गया है। उदाहरण के लिए, व्हीलचेयर इस्तेमाल करने वाला विद्यार्थी तब अधिक कठिनाई अनुभव करता है जब विद्यालय में सीढ़ियाँ हों और रैंप न हो। समस्या सिर्फ विद्यार्थी की शारीरिक स्थिति में नहीं, भवन की अनुपलब्धता में भी है।

दिव्यांगता को समझने के प्रमुख दृष्टिकोण चिकित्सा दृष्टिकोण व्यक्ति की स्वास्थ्य-संबंधी स्थिति, उपचार और पुनर्वास पर जोर देता है। यह चिकित्सा सहायता के लिए उपयोगी है, पर केवल इसी से सामाजिक बहिष्करण नहीं समझा जा सकता। सामाजिक दृष्टिकोण बताता है कि दुर्गम भवन, भेदभावपूर्ण नियम और नकारात्मक व्यवहार दिव्यांगता को बढ़ाते हैं। अधिकार-आधारित दृष्टिकोण व्यक्ति को दया या दान का पात्र नहीं बल्कि समान अधिकारों वाला नागरिक मानता है। उचित समायोजन, सुगम्यता, शिक्षा, रोजगार और स्वतंत्र निर्णय इस दृष्टिकोण के आवश्यक अंग हैं। ये दृष्टिकोण परस्पर संबंधित हैं; उपचार की जरूरत स्वीकार करते हुए भी समानता सुनिश्चित की जा सकती है।

समाज में दया और परोपकार का दृष्टिकोण कुछ लोग दिव्यांग व्यक्ति को हमेशा असहाय मानकर उसकी ओर सहानुभूति तो दिखाते हैं, लेकिन उसकी राय पूछना जरूरी नहीं समझते। परिणामस्वरूप व्यक्ति के लिए काम, यात्रा या पढ़ाई के निर्णय दूसरे लेने लगते हैं। सहायता तब उपयोगी होती है जब वह व्यक्ति की इच्छा और गरिमा के अनुरूप हो। अत्यधिक संरक्षण आत्मनिर्भरता तथा आत्मविश्वास कम कर सकता है।